बौद्ध साहित्य एवं साहित्यकार

एक अनुशीलन

प्रधान संपादक

डॉ. अविनाश जायसवाल

.COLLEGE
PRINCIPAL
L.V.D. College, RAICHUR-03.

बौद्ध साहित्य एवं साहित्यकार : एक अनुशीलन

प्रधान संपादक :

डॉ. अविनाश जायस्वाल

ISBN : 978-81-943387-2-7

प्रकाशन :

डॉ. साईनाथ सोटनक्के

संबोधी प्रकाशन

हा. नं. 75, हुंडा (प.उ.), ता. उमरी, जि. नांदेड

महाराष्ट्र - 431 807

मो. नं. 9550258826

E-mail : sontakke.sainath@gmail.com

प्रथम संस्करण : 28-02-2020

मुद्रक : SKV Colors, Hyderabad

मूल्य : 280

पुस्तक में संग्रहित लेखों से संबंधित सभी तथ्य, वाद-विवाद, विचार के संबंध में आलेख के लेखक और लेखिका स्वयं उत्तरदायी हैं, इसके लिए प्रकाशक, प्रधान संपादक, संपादक मंडल जिम्मेदार नहीं।

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

शब्द और शब्द - डॉ. अविनाश जायसवाल

बौद्ध साहित्य एवं साहित्यकार : एक अनुशीलन

1. बौद्ध धर्म के अनुयायी डॉ. आंबेडकर – डॉ. पी. पार्वती 1-3
2. बौद्ध धर्म, दर्शन, संप्रदाय तथा साहित्य – डॉ. दासरी मौलाली 4-5
3. बौद्ध साहित्य में बौद्ध दर्शन – डॉ. मोदुमपल्ली संपत 6-7
4. बौद्ध धर्म की भारतीय संस्कृति को देन – डॉ. मीना सिंह 8-10
5. दलित साहित्य एवं बौद्ध दर्शन - डॉ. ई. सुनिता 11-12
6. हिंदी काव्य में बौद्ध दर्शन (अज्ञेय की 'असाध्य वीणा' के संदर्भ में) - डॉ. वी. गोविंद 13-15
7. बौद्ध धर्म : इतिहास एवं महत्वपूर्ण सिद्धांत - डॉ. अपर्णा चतुर्वेदी 16-18
8. हिंदी के बौद्ध धर्म में स्त्रियों का स्थान - डॉ. अफ़सर उन्निसा बेगम 19-21
9. बौद्ध धर्म उद्धव और विकास - डॉ. के. नीरजा 22-24
10. अश्वघोष के काव्य में : सिद्धार्थ के मन में वैराग्य उत्पन्न - जी. प्रकाश 25-28
11. बौद्ध धर्म : उद्धव और विकास - डॉ. के. सोनिया 29-31
12. विश्वस्तर पर बौद्ध धर्म का प्रभाव - डॉ. संतोषी 32-34
13. हिंदी के बौद्ध साहित्य का सामाजिक पक्ष - सरदार ज्योति 35-37
14. हिंदी का बौद्ध साहित्य : आविर्भाव एवं स्वरूप - डॉ. अरुण हेरेमत 38-39
15. हिंदी साहित्य : बौद्ध दर्शन का प्रभाव - डॉ. के. माधवी 40-42
16. भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और उनका बौद्ध दर्शन - डॉ. एम. गोपी 43-45
17. भिक्षु संघ का निर्माण व धर्म प्रचार - आदि नारायण बादावत 46-47
18. बौद्ध धर्म के विभिन्न संप्रदाय - डॉ. के. श्याम सुंदर 48-50
19. सिद्ध कवि एवं सिद्ध साहित्य की विशेषताएँ - डॉ. टी. सुनीता 51-52
20. महायान, हीनयान तथा वज्रयान संप्रदायों में निहित सिद्धांत - डॉ. टी. सुमती 53-55
21. बुद्ध धर्म का उदय और अभ्युदय - सी.एच.वी. महालक्ष्मी 56-57
22. राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ. के. अन्षा 58-60

Scanned with OKEN Scanner

14. हिंदी का बौद्ध साहित्य : आविर्भाव एवं स्वरूप

डॉ. अरुण हेरेमत

बौद्ध धर्म विकृत होकर वज्रयान संप्रदाय के रूप में देश के पूरबी लोगों में बहुत दिनों से चला आ रहा था। इन बौद्ध तांत्रिकों के बीच वामाचार अपनी चरम सीमा को पहुचा। ये बिहार से लेकर आसाम तक फैले थे और सिद्ध कहलाते थे। चौरासी सिद्ध इन्हीं में हुए हैं, जिनका परंपरागत स्मरण जनता को अब तक है। इन तांत्रिक योगियों को लोग अलौविक शक्ति संपन्न समझते थे। ये अपनी सिद्धियों और विभूतियों के लिए प्रसिद्ध थे। राजशेखर ने 'कर्पूरी मंजरी' में भैरवानंद के नाम से एक ऐसे ही सिद्ध योगी का समावेश किया है। बिहार के नालंदा और विक्रमशिला नामक प्रसिद्ध विद्यापीठ इनके अड्डे थे। बख्तियार खिलजी ने इन दोनों स्थानों को जब उजाड़ा तब से ये तितर-बितर हो गये। बहुत से भोट आदि अन्य देशों को चले गये।

चौरासी सिद्धों के नाम ये हैं – लूहिपा, लीलापा, विरूपा, डोभिपा, शबरीपा, सरहपा, कलापीपा, मीनपा, गोरक्षपा, चौरगीपा, वीणापा, शांतिपा, ततिपा, चमरिपा, खड्गपा, नागार्जुन, कण्हपा, कर्णरिपा, थगनपा, नारोपा, शीलपा, तिलोपा, छत्रपा, भद्रपा, दोखधिपा, अजागिपा, कालपा, धोभिपा, ककंणपा, कंपरिपा, डेगिपा, भदेपा, तंधेपा, कुक्कुरिपा, कुचपा, अचितिपा, भल्लहपा, नलिनपा, भुसुकुपा, इंद्रभूति, मेकोपा, कुठालिया, कमरिपा, जालधरण, राहुलपा, धर्मरिपा, धोकरिपा, मेदिनीपा, पंकजपा, घटापा, जोगीपा, चेलुकपा, गुंडरिपा, निर्गुणपा, जयानत, चर्पटीपा, चपकपा, भिखनपा, भलिपा, कुपरिपा, चेंवरिपा, मणिभद्रपा (योगिनी), कनखलापा (योगिनी), कलकलपा, कतालीपा, धहुरिपा, उधरिपा, कपालपा, किलपा, सागरमपा, सर्वभक्षपा, नागबोधिपा, दारिकपा, पुतलिपा, पनहपा, कोकालिया, अनगपा, लक्ष्मीकरा (योगिनी), समुदमा, भलिपा। (पा आदरार्थक पाद शब्द है। इस सूची के नाम पूर्वापर कालानुक्रम से नहीं है। इनमें से कई एक समसामयिक थे।)

वज्रयान शाखा में जो योगी सिद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए वे अपने मत का संस्कार जनता पर भी डालना चाहते थे। इससे वे संस्कृत रचनाओं के अतिरिक्त अपनी यानी अपभ्रंशमिश्रित देश भाषा या काव्यभाषा में भी बराबर सुनाते रहे। उनकी रचनाओं का एक संग्रह पहले म.म. हरप्रसाद शास्त्री ने बंगला अक्षरों में 'बौद्धगान ओ दोहा' के नाम से निकाला था। पीछे त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायन जी भोट देश में जाकर सिद्धों की और बहुत सी रचनाएँ लाये। सिद्धों में से सहसे पुराने 'सरह' (सरोजवज्र भी नाम है) है जिनका

PRINCIPAL
V.V.D. College, RAICHUR-03.

काल डॉ. विनयतोष भट्टाचार्य ने विक्रम संवत् 690 निश्चित किया है। उनकी रचना के कुछ नमूने नीचे दिये जाते हैं। अतस्साधना पर जोर और पंडितों को पटकार- "पंडिअ सअल सत्त बक्खाणइ/देहहि रुद्ध बसंत न जाणइ/ अमणागमण ण तेण विखंडिए। तोवि ण्लिज्जई भणइ हउँ पंडिए।" वज्रयानियों की योगतंत्र साधनाओं में मद्य तथा स्त्रियों का विशेषत: डोमिनी, रजकी आदि का अबाध सेवन एक आवश्यक अंग था। सिद्ध कण्हपा डोमिनी का आह्वान गीत इस प्रकार है- "नगर बाहिरे डोंबी तोहरि कुडिया छइ। छोइ जाइ सो बाह्य नाड़िया।"

बौद्ध धर्म ने जब तांत्रिक रूप धारण किया, तब उसमें से पाँच ध्यानी बुद्धा और उनकी शक्तियों के अतिरिक्त अनेक बोधिसत्वों की भावना की गयी जो सृष्टि का परिचालन करते है। वज्रयान में आकर 'महासुखवाद' का प्रवर्तन हुआ। प्रज्ञा और उपाय के योग से इस महासुख दशा की प्राप्ति मानी गयी। इसे आनदस्वरूप ईश्वरत्व ही समझिए। निर्वाण के तीन अवयव ठहराये गये शून्य विज्ञान और महासुख। उपनिषद में तो ब्रह्मानंद के सुख परिणाम का अंदाजा करने के लिए उसे सहवाससुख से सौ गुना कहा था, पर वज्रयान में निर्वाण के सुख का स्वरूप ही सहवाससुख के समान बताया गया। शक्तियों सहित देवताओं के युगनद्ध स्वरूप की भावना चली और उनकी नग्न मूर्तियाँ सहवास की अनेक अश्लील मुद्राओं में बनने लगी, जो कहीं-कहीं अब भी मिलती है। रहस्य या गुह्य की प्रवृत्ति बढ़ती गयी और 'गुह्यसमाज' या 'श्रीसमाज' स्थान-स्थान पर होने लगे। ऊँच-नीच कई वर्ण की स्त्रियों को लेकर मद्यपान के साथप अनेक बीभत्स विधान वज्रयानियों की साधना के प्रधान अंग थे। सिद्धि प्राप्त करने के लिए किसी स्त्री का (जिसे शक्ति योगिनी या महामुद्रा कहते थे) योग या सेवन आवश्यक था। इसमें कोई संदेह नहीं कि जिस समय मुसलमान भारत आये उस समय देश के पूरबी भागों में (बिहार, बंगाल और उडिसा में) धर्म के नाम पर दुराचार फैला था।

डॉ. अरुण हेरेमत
विभाग अध्यक्षा
एल.वी.डी. कॉलेज
रायपूर, कर्नाटक
मो.नं. 8277622133

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-943387-2-7

संबोधी प्रकाशन, नांदेड

Scanned with OKEN Scanner